रोगों का अन्तर्राष्ट्रीय वर्गीकरण - 10वाँ संस्करण

आई सी डी - 10 का वर्गीकरण मूलत : 18वीं शताब्दी में स्वीडेन के जीवविज्ञानी Carolus Linnaeus , सवप्रथम प्रस्तुत किया । उन्होंने Geneva Plantarum में यह कहा है , " All the real knowledge which we possess depends on methods by which we distinguish the similar from dis similar . . . . . " इन्होने अनेक अनुसंधानकर्ताओं को इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जनमrancois Bissler de Sauvages एव William Cullen का नाम प्रमुख हा आइ सी डी - 8 का प्रकाशन 1968 में आइ सी डी - १ का प्रकाशन 1978 म तथा इसक आतम सस्करण का प्रकाशन - International Statistics Classification of Diseases and Related Health Problems (ICD - 10) का विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा 1992 में हुआ जिसमें । चिकित्सकीय दशाओं एवं मानसिक विकृतियों के व्यापक वर्गीकरण प्रणाली को प्रस्तुत किया गया है । 2002000 ०००००००००० ०००००००००००० ०००००००००० 200000 उपयोग समस्त संसार में किया जाता है । यद्यपि कुछ देशों तथा जापान एवं संयुक्त राष्ट्र में इसके संगत एवं परिमार्जित रूप का प्रयोग किया जाता है के निरीक्षण में विश्व के विशेषज्ञों एवं मनोचिकित्सकों ने मानसिक विकृतियों का वर्गीकरण अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किया । आइ एस डी 10 के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य आइ एस डी - 9 के पुराने संस्करणों की कमियों को दूर करना था । इस संस्करण मे उन रोगों को भी सम्मिलित किया गया जिन्हें पहले के संस्करणों में सम्मिलित नहीं किया गया था । इस वर्गीकरण में प्रत्येक मानसिक विकार को उसके निर्धारित स्थान पर ही नहीं रखा गया वरन् उसे एक निर्धारित कोड संख्या भी प्रदान किया गया । इस वर्गीकरण में कुल 10 वर्गा का प्रयोग किया गया है । इनके लक्षण उभयनिष्ठ है । इन्हीं उभयनिष्ठ लक्षणों के आधार पर आइ एस डी 10 का व्यवस्थापन 10 वर्गा में किया गया है । इस वर्गीकरण की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें कुछ रिक्त स्थानों की भी व्यवस्था की गई है ताकि भविष्य में किये गये अनुसंधानों से प्राप्त परिणामों को इन रिक्त स्थानों पर निधारित किया जा सके । इस वर्गीकरण - मे मानसिक विकारों का वर्गीकरण करते समय व्यूत्पत्ति लक्षण , आया जटिलता आदि मान्य आधारों का उपयोग ताकिकता के आधार पर किया गया है ।

आई सी डी - 10 के अनुसार मानसिक विकारों का वर्गीकरण

डब्लयू एच ओ ने 1992 मे आई सी डी - 10 का प्रकाशन किया । समस्त मानसिक विकारो को आई | सी डी - 10 के खण्ड वी - एफ में रखा गया है । इस वर्गीकरण में उभयनिष्ठ लक्षणों के आधार पर 10 प्रमख वर्गों का प्रयोग किया गया है जिनका वर्णन अधोप्रस्तुत है

1 . आंगिक लक्षणयुक्त मानसिक विकार: इस वर्ग में उन मानसिक विकारों को रखा गया है जो मस्तिष्कीय रोगों अथवा मस्तिष्कीय आघातों के कारण उत्पन्न होते हैं । इस वर्ग में अनेक प्रकार की मनोविकृतियों को सम्मिलित किया जा सकता है परन्तु उनका वर्गीकरण दो प्रमुख वर्गों में किया जा सकता है । प्रथम समूह में संज्ञानात्मक प्रकार्यो यथा स्मृति , बुद्धि , अधिगम , संवेदना प्रत्यक्षीकरण से सम्बन्धित मानसिक विकारों को सम्मिलित किया गया है । जबकि द्वितीय समूह में व्यक्ति की अभिव्यक्तियों भावों , अनुभवों , विचारों , भावनाओं एवं व्यक्तित्व में उत्पन्न विकारों के सलक्षणों को सम्मिलित किया गया है । इस वर्ग में सम्मिलित मानसिक विकारों को बाल्यावस्था मे ही नहीं , किसी भी आयु में प्राप्त किया जा सकता है । परन्तु वास्तविकता यह है कि यह मानसिक विकार बाल्यावस्था में कम , प्रौढ़ावस्था तथा वृद्धावस्था में अधिक उत्पन्न होते हैं । इनमें से कुछ मानसिक विकार | थोड़े समय के लिए ही होते है और उपचार से ठीक भी हो जाते हैं । परन्तु कुछ मानसिक विकार ऐसे होते | हैं जिनका उपचार सम्भव नहीं होता है और उनमें क्रमशः वृद्धि ही पाई जाती है ।
2 . मनोसक्रिय पदार्थों के कारण उत्पन्न मानसिक एवं व्यवहारपरक विकार: इस वर्ग में उन मानसिक विकारों को सम्मिलित किया गया है जिनकी उत्पत्ति मादक पदाथी जैसे शराब , चरस , गाँजा , भाँग , हेरोइन , तम्बाकू , कोकीन आदि के सेवन से उत्पन्न होती है । दइन मादक पदार्थों के उपयोग से रोगी मे मानसिक हास तथा

मनोविदलता के लक्षण उत्पन्न होतेहै । इसमें मनोविक्षिप्तता , मनोभशता आदि मनोविकारों को सम्मिलित किया गया है ।
3 . मनोविदलता , मनोविदलतासम एवं व्यामोहित विकार : इस वर्ग में मनोविदलता को प्रमुखता प्रदान की गई है जिसके प्रमुख लक्षध विप्रम एवं व्यामोह है । परन्तु । जिन विकारों में व्यामोह जैसे लक्षण नहीं भी पाये जाते हैं परन्तु मनोविदलता के कुछ लक्षण अवश्य विद्यमान रहते हैं , उन्हें भी समानता के आधार पर इसी वर्ग में सम्मिलित किया गया है , क्योंकि रोग का प्रारम्भिक अवस्था में चिकित्सकीय परीक्षण के उपरांत भी इन दोनों प्रकार के मनोविकारों के मध्य अन्तर करने में कठिनाई होश है । इसीलिए मनोविदलतासम विकार को इसमें सम्मिलित किया गया है । क्योकि मनोविदलतासम मे मनोविदलता के कई विशिष्ट लक्षण पाये जाते है । इसीलिए इसे मनोविदलता । के साथ एक वर्ग में रखा गया है ।

4 . मनोवशाजन्य (भावात्मक) विकार: इस वर्ग में उन मनोविकारों को सम्मिलित किया गया है जो मनोदशाओं में परिवर्तन के कारण उत्पन्न । होते है । जब रोगी में अवसाद अथवा उल्लास की गनोदशा पाई जाती है तब इन विकारों की व्युत्पत्ति होती है क्योंकि इन मनोदशा परिवर्तनों के कारण रोगी में भिन्नतापरक शारीरिक परिवर्तन भी घटित होते । है । यह मानसिक विकार सभी आय के व्यक्तियों में पाया जा सकता है तथा इन विकरों के पुनरावृत्ति होने की सम्भावना भी माई जाती है ।

5 . मनस्तापी , प्रतिबल सम्बन्धी एवं दैहिक विकार :इस वर्ग के अन्तर्गत व्यापक मानसिक विकारों को रखा गया है जिनका सम्बन्ध मनस्ताप के अभिग्रहों से है । इस वर्ग से सम्बन्धित मनोविकार मनोजन्य होते है परन्तु इनकी अभिव्यक्ति शारीरिक विकारों के रूप में होती है । अन्तर्राष्ट्रीय जगत के मनोचिकित्सकों ने सर्वसम्मत रूप से इन विकारों के समूहीकरण की उपयोगिता को स्वीकार किया है । ऐसे विकारों के लक्षण अपतंत्रक एवं मनोग्रस्तता बाध्यता में पाये । जाते है । परन्तु इस वर्गीकरण में हिस्टीरिया शब्द का प्रयोग न करके वियोजनात्मक शब्द का प्रयोग किया गया है ।

6 . शारीरिक एवं भौतिक कारणों से ख्लन व्यवहारिक संलक्षण: इस वर्ग में उन मनोविकारों को सम्मिलित किया गया है जिनके संलक्षण भोजन क्रिया सम्बन्धी विकार | निदा विकार , रति विकार आदि से सम्बन्धित होते है । इन विकारों से सामान्य शारीरिक क्रिया कलापों में अवरोध उत्पन्न होता है ।

7 . वयस्क व्यक्लित्व एवं व्यवहार सम्बन्धी विकार: इस संवर्ग के अन्तर्गत उन विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्व विकारों को रखा गया है जो व्यक्ति के विशिष्ट जीवन शैली तथा विशिष्ट व्यवहार पद्धति से सम्बन्धित होती है । यह संलक्षण अपेक्षाकृत स्थाई होते है । इनमें से कुछ जीवन शैलियाँ और व्यवहार पद्धतियाँ व्यक्ति के विकास की प्रारम्भिक अवस्था में शरीर संरचना एवं सामाजिक अनुभवों के कारण प्रकट होती है तथा बाद में उनका विकस होता है । यह विकार व्यक्ति की जीवन शैली पर प्रकाश डालते हैं । इन व्यक्तित्व विकारों को मानसिक विकारों की संज्ञा दी जाती है ।

8 . बौद्धिक मंदता: इस वर्ग में बौद्धिक क्षीणता को एक मानसिक विकार मानकर रखा गया है क्योंकि मानसिक विकास- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि नोट्स अवरुद्ध हो जाने पर व्यक्ति में सामान्य व्यक्तियों कई तुलना में 3 गुना अधिक मानसिक विकारों के पाये । जाने की सम्भावना रहती हैं । ऐसे मानसिक रोगी नवीन तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में न ता उपयुक्त व्यवहार ही प्रदर्शित कर पाते है और न दूसरे व्यक्तियो द्वारा शारीरिक और यौन शोषध होने पर अपनी सुरक्षा कर पाते है । व्यक्ति में पाई जाने वाली बौद्धिक मंदता के अनेक स्तर मूर्खता मूढ़ता एवं जड़ता है ।

9. मनोवैज्ञानिक विकास के विकार :इस वर्ग में उन मानसिक विकारों को रखा गया है जिनका विकास शैशवस्था में प्रारम्भ हो जाता है अथवा बाल्यावस्था मे । इन मानसिक विकारो मे भाषा सम्बन्धी दोष , ख्रष्टि सम्बन्धी दोष तथा गति सम्बन्धी क्रियायों में उत्पन्न दोषों को सम्मिलित किया जाता है । इन दोषों के उत्पन्न होने का कारण बच्चे के स्नायु तन्त्र का अपरिपक्व विकास है । इन मानसिक विकारो का प्रमुख लक्षध यह है कि इनमें न तो अग्रगति पाया जाता है और न ही लक्षणहीनता अथवा पुनरावृत्ति पाया जाता है ।

10 . बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था के व्यावहारिक एवं संवेगात्मक विकार: इस वर्ग में बाल्यावस्था और किशोरावस्था में दिखाई पड़ने वाले व्यवहारपरक एवं सांवगिक भावात्मका विकारों को रखा गया है । उदाहरणस्वरूप अतिक्रियाशील एवं आचरण सम्बन्धी विकारों को लिया जा सकता है । इन विकारों की अभिव्यक्ति में वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है । इन विकरो का उपचार और नियन्त्रण अवश्य किया जाना चाहिए ।